कानपुर। रविवार • 7 नवम्बर • 2021

राष्ट्रीय सहारा

पराली जलाने से जमीन धीरे-धीरे हो जाती है बंजर

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने किसानों को खेतों में फसल के अवशेष (पराली/पुआल) जलाने से जमीन धीरे-धीरे बंजर हो जाती है। उन्होंने किसानों से खेत में पराली न जलाने की अपील करते हुए कहा है कि पुआल का लाभ खेत को अधिक उपजाऊ बनाने में करें। पुआल को खेत की मिट्टी में मिला दें, क्योंकि एक टन पुआल को जमीन में मिलाने से करीब 400 किग्रा मिट्टी को विभिन्न पोषक तत्व मिलते हैं, जो जमीन को उपजाऊ बनाते हैं व बेहतर फसल मिलती है।

खेतों में पुआल मिलाने से मिट्टी को मिलते हैं कई पोषक तत्व

फसल अवशेष जलाने से मिट्टी का तापमान बढ़ने से मर जाते हैं मृदा में सूक्ष्म जीवाणु

किसान पुआल से खाद बनाने को करें डी-कंपोजर का प्रयोग

पुआल को 15 से 20 दिनों में खाद बना देता है डी-कंपोजर

कुलपति डॉ. सिंह ने कहा कि किसान धान की फसल अवशेषों को खेत में न जलायें, क्योंकि पराली जलाने से भूमि की उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाती है। उन्होंने बताया कि 1 टन पुआल को मिट्टी में मिलाने से 5.5 किग्रा नाइट्रोजन, 2.3 किग्रा फास्फोरस, 25 किग्रा पोटाश, 1.2 किग्रा सल्फर तथा 400 किग्रा जैविक पदार्थ सहित अन्य पोषक तत्व मिट्टी में मिल जाते हैं। फलस्वरूप मृदा की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है और अगली फसल में लेने में फसल लागत कम आती है।

उन्होंने कहा कि उक्त लाभ के विपरीत फसल अवशेषों को खेतों में जलाने से मिट्टी का तापमान बढ़ने के कारण मृदा में उपलब्ध सूक्ष्म जीवाणु केंचुआ आदि मर जाते हैं। इसके अतिरिक्त जैविक कार्बन जो पहले से ही मिट्टी में कम है, जलकर नष्ट हो जाता है। फलतः जमीन बंजर एवं अनुत्पादक हो जाती है। इससे वातावरण भी दूषित होता है तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि वे भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा विकसित एक जैव अपघटक 'पूसा डी कंपोजर का प्रयोग करें, जो फसल के अवशेषों को 15 से 20 दिनों में खाद में बदल देता है। इस डी कंपोजर में ₹ 20 की लागत वाले 4 कैप्सूल का एक पैकेट होता है, जो धान की भूसे के घटकों पर कार्य करने की क्षमता रखने वाले एंजाइम का उत्पादन करता है। सक्रिय कवक के साथ पुआल 15 से 20 दिनों में विघटित होकर खाद बन जाती है।

आज महानगर

कानपुर 7 नवम्बर, 2021 5

ऊसर भूमि पर 20 नवम्बर तक गेहूं की बुवाई करें किसान, बढ़ेगी पैदावार

❑ ऊसर भूमियों में गेहूं की उत्पादन तकनीक विषय पर वैज्ञानिकों ने दी जानकारियां

कृषि वैज्ञानिक

कानपुर, 6 नवम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की ओर से विभागाध्यक्ष डॉ रविंद्र कुमार ने ऊसर भूमियों में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक विषय पर कृषकों के लिए एडवाइजरी जारी की। डॉ कुमार ने बताया कि भारत में लगभग 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि लवणीय तथा छार से प्रभावित है, जिसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर छारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर लवण तथा छार से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज,मैनपुरी सहित कई जनपद लवण तथा छार से प्रभावित है। वैज्ञानिक ने बताया कि इन भूमियों में लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के संयोजन से उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा को सतत रूप से स्थाई करने में महत्वपूर्ण योगदान होगा। विभाग के डॉ देवेंद्र सिंह ने बताया कि ऊसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें तथा बड़े-बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें तथा मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर 200 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान का कहना है कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है। अतः संस्तुति मात्रा से सवा गुना ज्यादा अर्थात 115 से 120 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य प्रयोग करना चाहिए। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधन करने के बाद किसान भाई बुवाई करें।

डॉ खान ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि वह ऊसर भूमियों में गेहूं की बुवाई 20 नवंबर तक अवश्य कर दें। बुवाई के दिनों में औसत तापमान 20 डिग्री सेल्सियस उत्तम होता है । वैज्ञानिक ने बताया कि बीज 5 सेंटीमीटर से अधिक गहराई पर न डालें। ऊसर भूमियों हेतु गेहूं की प्रजातियां की आर एल 210 एवं के आर एल 213 सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि इन प्रजातियों का चयन कर किसान भाई ऊसर भूमियों में बुवाई कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

कानपुर। रविवार • 7 नवम्बर • 2021

राष्ट्रीय सहारा

'लवण व क्षारयुक्त भूमि में की जा सकती है गेहूं की खेती'

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि गेहूं का उत्पादन बढ़ाने को किसानों को ऊसर भूमि में गेहूं उत्पादन की तकनीक को लेकर जागरूक कर रहा है। विवि ने इसके लिए किसानों को सलाह जारी की है। कृषि वैज्ञानिकों ने कहा है कि ऊसर भूमि के लिए विशेष प्रजातियों के बीज का प्रयोग कर किसान बेहतर उत्पादन हासिल कर लाभ अर्जित कर सकते हैं।

उत्पादन बढ़ाने को सीएसए का ऊसर भूमि में गेहूं उत्पादन की तकनीक पर जोर

विवि कुलपति डॉ. डीआर सिंह की पहल पर चलाये जा रहे किसान जागरूकता कार्यक्रम के तहत अब ऊसर भूमि में गेहूं उत्पादन पर जोर दिया जा रहा है। विवि के मृदा विभाग एवं कृषि रसायन विभागाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र कुमार ने बताया कि उप्र में 13.69 लाख हेक्टेयर भूमि लवण तथा क्षार से प्रभावित है। मुख्य रूप से कानपुर नगर व देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, मैनपुरी सहित कई अन्य जिलों में लवण तथा छार प्रभावित जमीन बहुतायद में हैं, उन्होंने बताया कि इन भूमि में लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के संयोजन से उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा को सतत रूप से स्थायी करने में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. देवेन्द्र सिंह ने बताया कि ऊसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें तथा बड़े-बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें तथा मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर 200 किग्रा जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमि में बीज का जमाव कम होता है। अतः संस्तुत मात्रा से सवा गुना ज्यादा अर्थात 115 से 120 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। बीज का शोधन करने के बाद ही किसान बुवाई करें। बीज शोधन के लिए कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किग्रा का प्रयोग करें। डॉ. खान के किसानों को सलाह दी है कि ऊसर भूमि में गेहूं की बुवाई 20 नवम्बर तक अवश्य कर दें। बुवाई के दिनों में औसत तापमान 20 डिग्री सेल्सियस उत्तम होता है। बीज 5 सेमी से अधिक गहराई पर न डाला जाये। ऊसर भूमि के लिये गेहूं की आरएस 210 एवं केआरएल 213 प्रजातियां सर्वोत्तम हैं।

रविवार • 07.11.2021

अमर उजाला 05

ऊसर भूमि में 20 नवंबर तक कर दें गेहूं की बुआई

सीएसए के वैज्ञानिक ने जारी की एडवाइजरी

संस्तुति मात्रा से सवा गुना ज्यादा करें बीज का प्रयोग

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र कुमार ने ऊसर भूमि में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि यूपी में 13.69 लाख हेक्टेयर भूमि लवण और छार से प्रभावित है। कानपुर नगर, देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज, मैनपुरी समेत कई जनपदों में इस तरह की भूमि है। ऐसे में इन भूमियों पर हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें और बड़े-बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें। मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर प्रति हेक्टेयर 200 किलोग्राम जिप्सम का प्रयोग करें। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है। ऐसे में संस्तुति मात्रा से सवा गुना ज्यादा बीज का प्रयोग करें। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम से करें। ऊसर भूमियों में गेहूं की बुआई 20 नवंबर तक अवश्य कर दें। बीज पांच सेंटीमीटर से अधिक गहराई पर न डालें। (संवाद)